टिप्पणी

223hi06

6

भारतीय भाषाएँ तथा साहित्य-I

सागर और समीर छुट्टियों में अण्डमान तथा निकोबार द्वीप में भ्रमण के लिए गए। उन्होंने वहाँ समुद्र के किनारे खेलकर और अनेक छोटे द्वीपों को देखकर अच्छा समय व्यतीत किया। परन्तु उन्हें वहाँ कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा। वे स्थानीय लोगों की भाषा को नहीं समझ पा रहे थे। परिणामस्वरूप वे ऐसी अनेक बातें नहीं जान सके जिन्हें वहाँ के जनजाति के लोगों ने अपने विषय में बताईं। इससे आप भाषा के महत्त्व को समझ सकते हैं। भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को प्रकट करते हैं जबकि साहित्य एक ऐसा दर्पण है जो हमारे समाज में प्रभावी विचारों और दर्शनों को प्रतिबिम्बित करता है। अत: किसी विशेष संस्कृति और उसकी परम्पराओं को जानने के लिए यह आवश्यक है कि हम उसकी भाषाओं के क्रमिक विकास एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कविता, नाटक, धार्मिक तथा गैर धार्मिक लेखों को समझें। इस पाठ में हम भारत की मिश्रित सांस्कृतिक विरासत के निर्माण में विभिन्न भाषाओं की भूमिका के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:–

- भारत की समृद्ध साहित्यिक विरासत का परीक्षण कर सकेंगे;
- भारत में भाषा तथा साहित्य की विविधता से परिचित हो सकेंगे;
- भारत की विभिन्न भाषाओं तथा साहित्यों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- भारत की भाषा तथा साहित्य में विविधता में निहित एकता की सराहना कर सकेंगे;
- विश्व-साहित्य में भारत के महत्त्वपूर्ण योगदान को पहचान सकेंगे।

टिप्पणी

6.1 भारतीय भाषाएँ- संस्कृत की भूमिका

मनुष्य ने जब से लिपियों का आविष्कार किया है तब से लेखन में संस्कृति, जीवनशैली, समाज तथा तत्कालीन सामाजिक राजव्यवस्था उसमें प्रतिबिम्बित होती रही है। इस प्रक्रिया में प्रत्येक संस्कृति ने अपनी भाषा का विकास किया तथा विशाल साहित्यिक आधार तैयार किया। किसी भी सभ्यता का यह साहित्यिक आधार उसकी भाषा तथा शताब्दियों की अवधि के मध्य उसकी संस्कृति के विकास के बारे में बताता है।

संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी है। वेद, उपनिषद, पुराण एवं धर्म-सूत्र संस्कृत में रचे गए हैं। विभिन्न प्रकार का धर्म निरपेक्ष और क्षेत्रीय साहित्य विद्यमान है। प्राचीन समय के साहित्य तथा भाषाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करके हम अपनी सभ्यता को अच्छे ढंग से समझ सकेंगे तथा अपनी संस्कृति की विविधता तथा समृद्धि के महत्त्व की सराहना कर सकेंगे। यह सब उन भाषाओं के कारण ही सम्भव हुआ जो उस समय में विकसित की गईं।

संस्कृत हमारे देश की प्राचीनतम भाषा है। यह भारतीय संविधान में अनुसूचित 22 भाषाओं में से एक है। संस्कृत का साहित्य विशाल है, जिसका आरंभ मानवजाति के प्राचीनतम माने जाने वाले ग्रन्थ ''ऋग्वेद'' से माना जाता है। संस्कृत भाषा ने ही अठारहवीं शताब्दी में भाषा विज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन पर बल दिया। महान व्याकरणविद पाणिनि ने अपने अद्वितीय विवरणात्मक व्याकरण ग्रंथ ''अष्टाध्यायी'' में संस्कृत तथा इसके शब्द निर्माण का विश्लेषण किया है।

बौद्ध धर्म के संस्कृत ग्रन्थों में महायान तथा हीनयान शाखाओं के समृद्ध साहित्य का वर्णन है। हीनयान शाखा का सबसे महत्वपूर्ण साहित्य 'महावस्तु' है जो कथाओं का भण्डार है। जबकि 'ललित विस्तार' में महायान शाखा की पवित्र पठन सामग्री है जिसने अश्वघोष की ''बुद्धचरित'' के लिए लेखन सामग्री प्रदान की।

संस्कृत, संभवत: एकमात्र ऐसी भाषा है, जो क्षेत्रों और सीमाओं की बाधाओं को लांघ जाती है। उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक भारत का ऐसा कोई भाग नहीं है जिसका इस भाषा में सहयोग न रहा हो, या इस भाषा के प्रभाव से वञ्चित हो। 'कल्हण' की 'राजतरंगिणी' कश्मीर के राजाओं का विस्तृत विवरण देती है। वहीं 'जोनराज' से हमें पृथ्वीराज के यश का पता चलता है। कालिदास की रचनाओं ने संस्कृत साहित्य के भण्डार को चार चांद लगा दिए।

> भारतीय साहित्य के स्वर्णकाल में अनेक महान लेखन कार्य किए गए जैसे कालिदास का ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' एवं ''रघुवंशमहाकाव्यम्'', शूद्रक का ''मृच्छकटिकम्'' भास का ''स्वप्नवासवदत्तम्'' तथा श्रीहर्ष की ''रत्नावली''। इनके अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ है- चाणक्य का ''अर्थशास्त्र'' तथा वात्स्यायन का ''कामसूत्र''!

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 6.1

1. भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण प्राचीन भाषा का नाम लिखिए।

   .....

2. मानवजाति की सबसे प्राचीन साहित्यिक विरासत कौन-सी हैं?

   .....

6.2 वेद

वेद भारत का प्राचीनतम ज्ञात साहित्य है। वेद संस्कृत में रचे गए तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप में सम्प्रेषित होते रहे। क्या आप जानते हैं कि आज तक वेदों को संजोकर रखना ही भारतीयों की अति उत्तम उपलब्धि है। संसार के इतिहास में इस अनमोल वैदिक संपदा को संभालने का काम बेजोड़ है, जबकि लिपि का तथा लेखन सामग्री का भी पर्याप्त अभाव था।

वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' होता है। हिन्दु संस्कृति में वेदों को शाश्वत और ईश्वर प्रदत्त ज्ञान माना गया है। वे समस्त विश्व को एक मानव परिवार मानते हैं ''वसुधैवकुटुम्बकम्।'' वेद चार हैं: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। प्रत्येक वेद के अपने उपनिषद्, अरण्यक तथा ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद संयुक्त रूप में 'वेदत्रयी' जाने जाते हैं। कुछ समय बाद अथर्ववेद को भी इस वर्ग में सम्मिलित कर दिया गया।

ऋग्वेद

ऋग्वेद प्राचीनतम वेद है। यह वैदिक संस्कृति में लिखे 1028 सूक्तों का संग्रह है। उनमें से अनेक में प्रकृति का सुंदर वर्णन है। अधिकांश ऋचाओं में विश्व की समृद्धि की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। ऐसा माना जाता है कि ये ऋचाएँ ऋषियों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति हैं जो उन्होंने इन्द्रियातीत मानसिक अनुभूति की अवस्था में की थी। इन सुविख्यात ऋषियों में वसिष्ठ, गौतम, गृत्समद, वामदेव, विश्वामित्र, अत्रि आदि हैं। ऋग्वेद के प्रमुख देव इन्द्र, अग्नि, वरुण, रुद्र, आदित्य, वायु, उषा, अदिति और अश्विनी बंधु हैं। प्रमुख देवियों में उषा-प्रभात काल की देवी, वाक्-वाणी की देवी और पृथ्वी-भूमि की देवी है।

क्या आप जानते हैं कि अधिकांश सूक्त सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत जीवन के उच्चतम मूल्यों के संबंध में बताते हैं। जैसे सच्चाई, ईमानदारी, लगन, त्याग, विनम्रता तथा सदाचार आदि। सभी प्रार्थनाएँ संसार में भौतिक समृद्धि प्राप्त करने के लिए तथा उच्च सांस्कृतिक समाज के विकास के लिए हैं।

टिप्पणी

यजुर्वेद

'यजु' का अर्थ है यज्ञ या पूजा करना। यह वेद अधिकांशत: विभिन्न यज्ञों के धार्मिक अनुष्ठान और मंत्रों से संबंधित है। यह यज्ञ करने के लिए पद्धतियाँ बताता है। इसमें गद्य-पद्य दोनों रूपों में व्याख्याएँ हैं। यह कर्मकाण्ड से संबंधित पवित्र पुस्तक होने के कारण चारों वेदों में सर्वाधिक लोकप्रिय है। यजुर्वेद की दो प्रमुख शाखाएँ हैं, शुक्ल तथा कृष्ण यजुर्वेद अर्थात् वाजसेनीयी संहिता तथा तैत्तिरीय संहिता। यह ग्रन्थ उस समय की भारतीय सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति को दर्शाता है।

सामवेद

साम का अर्थ राग या गीत है। इसके कुल 1875 मन्त्रों में से केवल 75 मूल हैं शेष ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद में ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतमय पाठ करने की विधि का उल्लेख किया गया है। इसीलिए इस पुस्तक को 'साम' लय गान कहा गया है। यह ग्रन्थ भारतीय संगीत के विकास का मूल है।

अथर्ववेद

अथर्ववेद को ब्रह्मवेद के रूप में भी जाना जाता है। इसमें 99 रोगों के उपचार का उल्लेख है। इस वेद के स्रोत के रूप में दो ऋषियों अंगिरस तथा अथर्व को माना जाता है। अथर्ववेद बहुत मूल्यवान है क्योंकि यह सभ्यता के प्रारंभिक काल की धार्मिक वृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी 'पैप्पलाद' तथा 'शौनक' दो शाखाएँ हैं।

वेदों को जानने के लिए वेदांग अर्थात् वेदों के अंगों को जानना आवश्यक है। वेदों के ये सहायक ग्रंथ शिक्षा, व्याकरण, कल्प (कर्मकाण्ड) व्युत्पत्ति (निरुक्त), छंदविधान (छंद) और ज्योतिष का ज्ञान देते हैं। अधिकांश साहित्य इन्हीं विषयों पर रचे गये हैं। यह सूत्र-शैली में उपदेशों के रूप में लिखे गये हैं। संक्षिप्त शैली में निबद्ध निर्देश सूत्र कहलाता हैं। इसका सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण पाणिनि की व्याकरण है, जिसे 'अष्टाध्यायी' कहा जाता है। इसमें व्याकरण के नियमों का उल्लेख किया गया है तथा यह पुस्तक उस समय के समाज, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति पर भी प्रकाश डालती है।

ब्राह्मण और आरण्यक

चार वेदों के पश्चात् अन्य कई कृतियाँ जिन्हें 'ब्राह्मण' कहा गया, विकसित हुईं। इन ग्रंथों में वैदिक कर्मकाण्ड की विस्तृत व्याख्या, निर्देशन तथा यज्ञ विधान का उल्लेख किया गया है। ब्राह्मण के पिछले भाग 'आरण्यक' कहे गये जबकि आरण्यक के अंतिम भाग उपनिषद नामक दार्शनिक पुस्तकें हैं, जो ब्राह्मण साहित्य की परवर्ती अवस्था के प्रतीक हैं।

टिप्पणी

चारों वेदों में से प्रत्येक के अपने ब्राह्मण ग्रन्थ है। ऋग्वेद के दो ब्राह्मण हैं कौशितकी और ऐतरेय। तैत्तिरीय कृष्ण यजुर्वेद से जुड़ा है और शतपथब्राह्मण शुक्लयजुर्वेद से। ताण्ड्य, पंचविंश और जैमिनीय अथर्ववेद के उपनिषद् हैं। इनके द्वारा हमें लोगों के सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन की विस्तृत जानकारी मिलती है। आरण्यक में आत्मा, जन्म और मृत्यु तथा मृत्योपरान्त जीवन का उल्लेख आता है। ये वानप्रस्थी व्यक्तियों के द्वारा पढ़े और पढ़ाये जाते थे जैसे मुनि और आरण्यकों में रहने वाले व्यक्ति।

यह सारे-ग्रन्थ संस्कृत में थे। आरंभ में यह मौखिक रूप से एक से दूसरे को दिये जाते थे परंतु बहुत बाद में लिखित रूप प्रदान कर दिया गया।

वेदों के काल को निश्चित करना बहुत कठिन कार्य है। मैक्समूलर के अनुसार ऋग्वेद को 1000 ईसा पूर्व लिखा गया जबकि लोकमान्य तिलक के अनुसार यह ग्रन्थ 6000 ईसा पूर्व का है।

श्रुति एवं स्मृति में भेद

श्रुति और स्मृति दोनों ग्रन्थों की उन श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनका उपयोग हिन्दू परंपरा के अंतर्गत कानून का शासन स्थापित करने में किया जाता है। श्रुति एकमात्र दैविक उत्पत्ति है उनमें नियमों की कोई भी अवधारणा नहीं है। अत: इसको अलग-अलग श्लोकों के बजाय संपूर्णता में सुरक्षित रखा गया है। श्रुति में सस्वर पाठ और उसके दैविक गुणों को सुरक्षित रखने की इच्छा की जाती है न कि स्मृति की भाँति आवश्यक रूप से उस मौखिक परंपरा को समझने और व्याख्या करने की।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. 'वेद' शब्द का क्या अर्थ है?

   .....

2. चारों वेदों के नाम लिखें।

   .....

3. ''यजुर'' शब्द का क्या अर्थ है? यह उस समय के विषय में क्या सूचनाएँ हमें प्रदान करता है?

   .....

4. सामवेद से कितनी संगीत राग रागिनियाँ उत्पन्न हुई हैं?

   .....

टिप्पणी

6.3 उपनिषद्

उपनिषद् शब्द उप (समीप) और निषद् (बैठना) शब्दों से बनता है जिसका अर्थ है– ''समीप बैठना''। गुरुशिष्य परम्परा में ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिष्यों के समूह गुरु के समीप बैठते थे।

भारतीय विचारों का चरम बिंदु उपनिषदों में मिलता है जो वेदों के अंतिम भाग हैं। उपनिषदों में मूलभूत दार्शनिक समस्याओं की अमूर्त एवं गहन चर्चा निहित है। शिष्यों को इनकी शिक्षा अंत में दी जाती थी। इसीलिए उपनिषदों को वेदों का अंत कहा जाता है। वेद व्यक्त की पूजा से प्रारम्भ होते हैं और धीरे-धीरे अव्यक्त के ज्ञान में रूपान्तरित हो जाते हैं।

200 से अधिक उपनिषद् माने जाते हैं जिनमें से एक- 'मुक्तिका' 108 उपनिषदों की सूची प्रस्तुत करता है- यह संख्या हिन्दू जपमाला की पवित्र संख्या के समान होती है।

उपनिषद् हमारी साहित्यिक-विरासत का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। ये विश्व की उत्पत्ति, जीवन तथा मृत्यु, भौतिक तथा आध्यात्मिक जगत्, ज्ञान का स्वरूप आदि अन्य अनेक प्रश्नों से संबंधित चर्चाए प्रस्तुत करते हैं। सबसे प्राचीन उपनिषद् ''बृहदारण्यक'' शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित है और छान्दोग्य सामवेद से सम्बद्ध है। कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण उपनिषद ऐतरेय, केन, कठ उपनिषद् हैं। आप स्वयं, कुछ अन्य मुख्य उपनिषदों के नाम ढूंढिये। आप देखेंगे कि भारतीय दर्शन का नया जगत् आपके सामने प्रस्तुत हो रहा है। उपनिषद् पर अन्य कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। पहले छोटी-छोटी कहानियाँ पढ़िए। उनमें रुचि जागृत होगी तब किसी भी उपनिषद् को पूरी तरह पढ़ जाइए।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. उपनिषद् का क्या अर्थ है?

   .....

2. कुछ महत्त्वपूर्ण उपनिषदों के नाम बताइये।

   .....

6.4 रामायण और महाभारत

रामायण और महाभारत हमारे दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। वाल्मीकि की रामायण मूल रामायण है। इसे आदिकाव्य कहा जाता है और महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि। रामायण एक आदर्श समाज का चित्र प्रस्तुत करती है। दूसरा महाकाव्य, महाभारत, व्यास द्वारा रचित ग्रंथ है। यह मूलतः संस्कृत में है। प्रारम्भ में इसमें 8800 श्लोक थे, इसे 'जय' कहा जाता था अर्थात् विजय से सम्बन्धित ग्रन्थ। आगे चलकर इन श्लोकों की संख्या बढ़कर 24000 हो

गई और प्राचीनतम वैदिक जनजाति के नाम पर इसे 'भारत' के नाम से प्रसिद्धि मिली। अंतिम संकलन 100,000 श्लोकों का है, जिसे 'महाभारत' या शतसाहस्त्री संहिता के रूप में जाना जाता है। यह कौरव-पाण्डव युद्ध से संबंधित कथात्मक, वर्णनात्मक और उपदेशपरक ग्रंथ है। महाभारत और रामायण के भिन्न-भिन्न रूप अनेक भारतीय भाषाओं में पाए जाते हैं। सुविख्यात भगवत् गीता महाभारत का ही एक भाग है जिसमें दैवी प्रज्ञा का सार है और वास्तव में वह सार्वभौमिक धर्मग्रन्थ है। यद्यपि यह अत्यंत प्राचीन धार्मिक ग्रंथ है इसकी मौलिक शिक्षायें आज भी प्रयोग की जाती हैं।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को एक योद्धा और राजा के कर्त्तव्यों को समझाया, और विभिन्न यौगिक तथा वेदान्तिक दर्शनों को उदाहरणों तथा समानान्तर कथानकों से स्पष्ट किया। गीता हिन्दु दर्शन का एक संक्षिप्त ग्रन्थ और जीवन के लिए एक संक्षिप्त, सारगर्मित निर्देशिका है। आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी तथा बहुत से अन्य लोगों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गीता से ही प्रेरणा प्राप्त की। ऐसा इसलिए था क्योंकि भवगद्गीता मानवीय कर्मों में सकारात्मकता को प्रधानता देती है। यह ईश्वर और मनुष्य दोनों के ही प्रति अपने कर्तव्य का पालन, बिना फल की चिन्ता किए, करने की प्रेरणा देती है। आप इस बात को जान कर प्रसन्न होंगे कि भगवद्गीता का संसार की लगभग सभी मुख्य भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

पाठगत प्रश्न 6.4

1. संस्कृत में लिखे गए दो प्राचीन महाकाव्यों का नाम बतायें।

   .....

2. रामायण और महाभारत के रचयिता कौन हैं?

   .....

3. भगवतद्गीता में कृष्ण अर्जुन को क्या समझाते हैं?

   .....

6.5 पुराण

हिन्दुओं के पवित्र साहित्य में पुराणों का विशिष्ट स्थान है। वेदों और महाकाव्यों के पश्चात् इन्हीं को महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। संख्या में पुराण अठारह हैं और लगभग उतने ही

टिप्पणी

उप पुराण माने जाते हैं। कुछ प्रसिद्ध पुराणों के नाम है: ब्रह्म, भागवत्, पद्म, विष्णु, वायु, अग्नि, मत्स्य तथा गरुड़। इनका विकास उस समय से माना जा सकता है जब बौद्ध धर्म का महत्त्व बढ़ रहा था और वह ब्राह्मण संस्कृति का मुख्य विरोधी बन रहा था।

पुराण मिथकीय रचनाएँ हैं, जो नीति-कथाओं और कहानियों के माध्यम से धार्मिक और आध्यात्मिक संदेश देती हैं। लोगों के धार्मिक जीवन के विकास में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पुराण महाकाव्यों की शैली पर बने हैं। सबसे प्राचीन पुराण गुप्त काल में संकलित किये गये थे। ये ग्रंथ ऐसी पौराणिक कथाओं, कहानियों, किवदंतियों व उपदेशों से भरपूर हैं, जो सामान्य व्यक्ति को शिक्षा और नैतिक ज्ञान प्रदान करती हैं। इनमें महत्वपूर्ण भौगोलिक और ऐतिहासिक जानकारियाँ दी गई हैं। ये सृष्टि और पुन: सृष्टि के रहस्यों और वंशावलियों के बारे में भी बताते हैं। इस काल में बहुत सारी 'स्मृतियों' या पद्य में लिखे 'विधि' ग्रन्थों का भी संकलन हुआ। स्मृतियों पर टीकाएँ लिखने का काम गुप्तकाल के बाद शुरू हुआ। संस्कृत शब्दकोषकार अमरसिंह के अनुसार पुराणों में पांच विषयों पर चर्चा की जाती है– 1. सर्ग (सृष्टि) 2. प्रतिसर्ग (गौण सृष्टि) 3. वंश (वंशगत) 4. मन्वन्तर (मनुकाल) 5. वंशानुचरित (साम्राज्यों का इतिहास)

पाठगत प्रश्न 6.5

1. पुराणों की संख्या कितनी है?

   .....

2. पुराणों की कुछ विशेषताओं का उल्लेख करें।

   .....

6.6 पाली प्राकृत और संस्कृत में बौद्ध तथा जैन साहित्य

जैन और बौद्ध धर्म ग्रंथ ऐतिहासिक व्यक्तियों या घटनाओं की ओर संकेत करते हैं। प्राचीनतम बौद्ध धर्म-ग्रंथ पाली भाषा में हैं जो भाषा मगध और दक्षिणी बिहार में बोली जाती थी। बौद्ध ग्रंथों को कानून विषयक एवं सामान्य उपदेशात्मक में बांटा जा सकता है।

कानूनविषयक साहित्य का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व 'त्रिपिटक' अर्थात् तीन टोकरियाँ विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक करते हैं। विनय पिटक में दैनिक जीवन-व्यवहार के नियमों विनियमों का उल्लेख है तथा सुत्त पिटक में नैतिकता और धर्म संबंधी संवाद और प्रवचन हैं। जबकि अभिधम्म पिटक में दर्शन और तत्त्वमीमांसा है। इसमें अनेक विषय जैसे नैतिकता, मनोविज्ञान, ज्ञान तथा तत्त्वमीमांसा विषयक ज्ञान संबंधी समस्याएँ दी गई हैं।

सामान्य उपदेशात्मक साहित्य में सर्वोत्तम सिद्धान्त जातक हैं। जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्म की रोचक कथाएँ हैं। यह माना जाता था कि बुद्ध ने गौतम के रूप में जन्म लेने से पूर्व

टिप्पणी

500 से भी अधिक जन्मों में धर्म की साधना की थी, यहाँ तक कि जानवरों के रूप में भी। प्रत्येक जन्म कथा को जातक कहा गया है। जातकों में छठी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति विषयक महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है। उनमें बुद्ध के समय की राजनीतिक घटनाओं का भी प्रसंग के अनुसार वर्णन किया गया है।

जैन ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गए तथा उन्हें गुजरात में वल्लभी में छठी शताब्दी में अन्तिम रूप में संकलित किया गया। महत्त्वपूर्ण जैन-ग्रंथ अंग, उपांग, प्रकीर्ण, छेद-सूत्र तथा मालासूत्र हैं। महत्त्वपूर्ण जैन विद्वानों में हरिभद्र सूरी (आठवीं शताब्दी) तथा हेमचन्द्र सूरी (बारहवीं शताब्दी) हैं। जैन धर्म ने काव्य, दर्शन तथा व्याकरण आदि ग्रन्थों के रूप में एक समृद्ध साहित्य को विकसित किया। इन कृतियों में अनेक अंश पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के राजनैतिक इतिहास को समझने में सहायक हैं। जैन पुस्तकों में व्यापार और व्यापारियों का बार-बार उल्लेख किया गया है।

प्राचीन भारतीय साहित्य को दो विभागों में बाँटा जा सकता है- धार्मिक और गैर धार्मिक ग्रंथ।

(क) चार वेद:

ऋग्वेद- इस प्राचीनतम वेद में 1028 ऋचाएँ है जो 'सूक्त' (सुन्दर वचन) कहे जाते हैं।

सामवेद- इस के सूक्तों को विशेष वर्ग के पुरोहित सोम यज्ञ के समय सस्वर गाते थे।

यजुर्वेद- इसके मन्त्र साधारण यज्ञ के समय गाये जाते हैं।

अथर्ववेद में गीत, मंत्र-तंत्र, दुरात्माओं को दूर करने के लिए जादुई मन्त्र हैं।

(ख) ब्राह्मण: वेदों से जुड़े हैं। इनमें यज्ञ के महत्त्व तथा प्रभावोत्पादकता का विस्तार से वर्णन किया गया है।

(ग) अरण्यक- ये ब्राह्मण ग्रंथों के अन्तिम भाग हैं।

(घ) उपनिषद- का अर्थ है गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना।

(ङ) महाकाव्य- रामायण एवं महाभारत

(च) बौद्ध- साहित्य

(घ) जैन- साहित्य

पाठगत प्रश्न 6.6

1. प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथ किस भाषा में लिखे गये?

.....

टिप्पणी

2. त्रिपिटकों के नाम बताइए।

.....

3. जातक कथाएँ हमें क्या बताती हैं?

.....

4. कुछ जैन विद्वानों के नाम बताइए।

.....

6.7 अन्य संस्कृत साहित्य

हमारे पास विभिन्न विज्ञानों, विधि, औषधि, व्याकरण आदि के ग्रन्थों का एक बहुत बड़ा भण्डार है। इसी वर्ग में विधि-विधान संबंधी ग्रंथ भी आते हैं, जिन्हें धर्म सूत्र तथा स्मृति कहते हैं। दोनों को मिलाकर धर्मशास्त्र कहा गया है। धर्मसूत्रों को 500-200 ई.पू. के मध्य संकलित किया गया। इनमें विभिन्न वर्णों के साथ-साथ राजाओं और उनके कर्मचारियों के कर्त्तव्य बताए गए हैं। इनमें संपत्ति रखने, बेचने और इसके उत्तराधिकार के नियम दिए गए हैं। उनमें चोरी, आक्रमण, कत्ल, यौनाचार आदि के दोषी लोगों के लिए सजा भी निर्धारित की गई है। मनुस्मृति समाज में स्त्री और पुरुष की भूमिका, उनके लिए आचार-संहिता तथा उनके आपसी संबंधों के बारे में बताती है।

कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' मौर्यकाल का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। यह ग्रंथ उस समय के समाज की दशा और अर्थ-व्यवस्था को दर्शाता है। प्राचीन-भारत की राज व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था के अध्ययन के लिए यह ग्रंथ प्रचुर समाग्री उपलब्ध कराता है।

भास, शूद्रक, कालिदास और बाणभट्ट की रचनाएँ गुप्त और हर्ष कालीन, उत्तरी तथा मध्य भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक देती हैं। गुप्तकाल में ही पाणिनि और पतंजलि के संस्कृत व्याकरण पर आधारित व्याकरण ग्रन्थों का विकास हुआ।

गुप्तकाल के प्रसिद्ध संस्कृत लेखक:

गुप्त काल भारत की संस्कृति का सबसे उत्तम तथा प्रसिद्ध स्वर्णकाल माना जाता है। गुप्तकालीन राजाओं ने शास्त्रीय संस्कृत साहित्य को बढ़ावा दिया। वे संस्कृत के कवि तथा विद्वानों की सहायता करते थे। इससे संस्कृत भाषा समृद्ध हुई। वास्तव में संस्कृत भाषा सभ्य तथा शिक्षित लोगों की भाषा बन गई। इस काल में बहुत से महान कवि, नाटककारों और विद्वानों के ग्रन्थ संस्कृत साहित्य के उच्चकोटि के ग्रन्थ सिद्ध हुए।

1. कालिदास- कवि कालिदास ने अनेक सुंदर कविताएं और नाटक लिखे। संस्कृत में उनको काव्य साहित्य का 'रत्न' माना जाता है। उनकी आश्चर्यजनक विद्वत्ता दो खण्ड काव्य मेघदूत तथा ऋतुसंहार, दो महाकाव्य ''कुमारसंभव'' और ''रघुवंश''

टिप्पणी

आदि महान काव्यों में देखी जा सकती है। ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' तथा ''**विक्रमोर्वशीयम्**'', ''मालविकाग्निमित्रम्'' उनके सुप्रसिद्ध नाटक हैं।

2. विशाखदत्त- विशाखदत्त उस समय के एक अन्य महान नाटककार है। आपने ''मुद्राराक्षस'' तथा ''देव चन्द्रगुप्त'' जैसे दो एतिहासिक नाटक रचे।
3. शूद्रक- आपने ''मृच्छकटिकम् (मिट्टी की गाड़ी)'' जैसा सामयिक नाटक लिखा। यह उस काल की सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थितियों का स्रोत है।
4. हरिसेन- हरिसेन गुप्त काल के अनेक महान कवियों तथा नाटककारों में से एक थे। आपने समुद्रगुप्त की वीरता की प्रशंसा में अनेक कविताएं लिखीं। ये इलाहाबाद में स्तंभों पर खुदी हुई हैं।
5. भास- आपने उस समय के जीवनदर्शन और विश्वास तथा संस्कृति के प्रतीक तेरह नाटक लिखे।

कुषाण राजाओं ने संस्कृत के विद्वानों को संरक्षण दिया। अश्वघोष ने ''बुद्धचरितम्'' की रचना की है, जिसमें बुद्ध का जीवन चरित्र है। उन्होंने ''सौन्दरानन्द'' भी लिखा जो संस्कृत भाषा की एक श्रेष्ठ कृति है।

भारतवर्ष में गणित, खगोल, ज्योतिष, कृषि तथा भूगोल जैसे विषयों पर महान साहित्य लिखा गया। चरक ने चिकित्सा शास्त्र तथा सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा संबंधी ग्रन्थ लिखे। माधव ने 'औषधिविज्ञान ग्रंथ' की रचना की। वराहमिहिर तथा आर्यभट्ट द्वारा अंतरिक्ष विज्ञान पर तथा लगधाचार्य द्वारा ज्योतिष शास्त्र पर रचित पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं। वराहमिहिर की बृहत् संहिता, आर्यभटीयम्, तथा वेदांग ज्योतिष अतुलनीय ग्रन्थ हैं।

उत्तरी भारत में मध्यकाल के बाद कश्मीर में संस्कृत साहित्य का उदय हुआ। सोमदेव का ''कथासरितसागर'' तथा कल्हण की 'राजतरंगिणी' ऐतिहासिक महत्त्व के ग्रंथ हैं। यह कश्मीर के राजाओं के विषय में महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ देती हैं। जयदेव का 'गीतगोविंद' इस काल के संस्कृत साहित्य की सर्वोत्तम रचना है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषय जैसे कला, वास्तुकला, शिल्पकला मूर्तिकला आदि संबंधित क्षेत्रों में भी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गए।

पाठगत प्रश्न 6.7

1. धर्मशास्त्र का विषय क्या है?

   .....

2. राजतरंगिणी के रचयिता कौन हैं?

   .....

टिप्पणी

3. कालिदास के सर्वप्रसिद्ध नाटक का नाम लिखिए।

.....

4. जयदेव की पुस्तक का नाम बताइए।

.....

5. चिकित्सा शास्त्र के लेखक का नाम बताइए।

.....

6.8 तेलगु, कन्नड़ और मलयालम साहित्य

चार द्रविड भाषाएँ- तमिल, तेलगु, कन्नड़ और मलयालम में भी साहित्य रचा गया। तमिल इन सबसे प्राचीन भाषा होने के कारण इसमें लेखन कार्य पहले प्रारम्भ हुआ और ''संगम साहित्य'' की रचना की गई जो तमिल का सबसे प्राचीन साहित्य है।

तेलगु साहित्यः

विजयनगर काल को तेलगु साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता था। बुक्का प्रथम के राजकवि नाचणा सोमनाथ ने ''उत्तरहरिवंशम्'' नामक काव्य की रचना की। विजयनगर के महानतम शासक कृष्णदेव राय (1509 ई.-29) स्वयं महान कवि थे। उनकी रचना 'अमुक्त मलयदा' तेलगु साहित्य में उत्कृष्ट प्रबंध रचना मानी जाती है। 'अष्टदिग्गज' रूप में प्रख्यात तेलगु भाषा के आठ महान साहित्यकार उनके दरबार की शोभा थे। इनमें से अल्लसनी पेड्डना महानतम साहित्यकार माने जाते थे, जिन्होंने 'मनुचरितम्' नामक ग्रंथ की रचना की। उन्हें आंध्र कविता का पितामाह कहा जाता है। अन्य सात कवियों में 'पारिजातापहरणम्' के रचयिता नंदी तिम्मणा के अतिरिक्त मदयगरी मल्लण, धुर्जती, अय्यालाराजू रामभद्र कवि, पिंगली सुराण, रामराज भूषण तथा तेनाली रामकृष्ण हैं।

शिव भक्त धूर्जती ने 'कला हस्तिस्वर माहात्म्यम्'' और 'कलाहस्तिस्वर शतकम्' नामक दो रचनाएँ लिखीं। पिंगली सुराण ने 'राघवपांडवियम्' तथा 'कलापुरानोदयम्' नामक रचनाएँ लिखीं। पहली रचना में उन्होंने रामायण और महाभारत की कथा को एक साथ रचने की कोशिश की है। राजविदूषक तेनाली रामकृष्ण कृष्णदेवराय के राज दरबार के दिलचस्प व्यक्ति थे। तत्कालीन उच्चवर्ग के लोगों से संबंधित इनके व्यावहारिक चुटकले आज भी हमें गुदगुदाते हैं। रामकृष्ण 'पांडुरंग माहात्म्यम्' के रचनाकार हैं। उनकी यह रचना तेलुगु साहित्य की महान कृति मानी जाती है। रामराजभूषण 'वासुचरितम्' के रचनाकार हैं। इन्हें भट्टमूर्ति नाम से भी जाना जाता है। नरशंभुपांडवियम् तथा हरिश्चंद्र नलोपाख्यानम्' इनकी अन्य कृतियाँ है। यह 'राघवपाण्डवीयम्' की पद्धति पर लिखी काव्य रचना है। इसमें नल और हरिश्चंद्र की कथाएँ साथ-साथ पढ़ी जा सकती हैं। मदयगरी मल्लण कृत 'राजशेखरचरित' एक प्रबंध रचना है। इसकी विषयवस्तु अवन्ती के सम्राट राजशेखर का युद्ध एवं प्रेम है। अय्यालाराजू रामभद्र 'रामाभ्युदयम्' तथा सकलकथासार संग्रहम् कृतियों के रचनाकार हैं।

टिप्पणी

कन्नड़ साहित्यः-

तेलगु रचनाकारों के अलावा विजयनगर शासकों ने कन्नड़ और संस्कृत लेखकों को भी आश्रय दिया। अनेक जैन विद्वानों ने कन्नड़ साहित्य में योगदान किया। माधव ने पन्द्रहवें तीर्थंकर पर धर्मनाथ पुराण लिखा। अन्य जैन विद्वान उरित्त विलास ने 'धर्म परीक्षे' ग्रंथ की रचना की। इस काल की संस्कृत कृतियों में वेदनाथ देशिक का 'यादवाभ्युदयम्' तथा माध वाचार्य की 'पराशरस्मृति व्याख्या' शामिल है।

कन्नड़ भाषा का संपूर्ण विकास दसवीं शताब्दी के बाद हुआ। कन्नड़ की प्राचीनतम साहित्यिक कृति 'कविराजमार्ग' है जो राष्ट्रकूट के राजा नृपतुंग अधोवर्ष प्रथम द्वारा लिखी गई। पम्पा ने अपनी उत्कृष्ट काव्यात्मक कृतियाँ 'आदिपुराण' और विक्रमार्जुन विजय' दसवीं शताब्दी ई. में लिखीं। पम्पा को कन्नड़ कविता का जनक कहा जाता है। वे चालुक्य नरेश अरिकेशरी के दरबार में रहते थे। अपने काव्यात्मक ज्ञान, सौंदर्य के वर्णन, चरित्रों की व्याख्या और रसों के सृजन में पंपा का कोई जोड़ नहीं है। राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय के राज्य में रहने वाले अन्य दो कवि पोन्ना और रान्ना थे। पोन्ना ने 'शांतिपुराण' नामक एक महाकाव्य लिखा और रान्ना ने 'अजितनाथ पुराण' लिखा। इसलिए पम्पा, पोन्ना और रान्ना को रत्नत्रय' (तीन रत्न) की उपाधि दी गई।

तेरहवीं शताब्दी में कन्नड़ साहित्य में नए आयाम जुड़े। हरिश्वर ने 'हरिश्चन्द्र काव्य' और 'सोमनाथ चरित' तथा बंधुवर्मा ने 'हरिवंश- अभ्युदय' और 'जीवन संबोधन' की रचना की। होयसल शासकों के संरक्षण में अनेक साहित्यिक ग्रंथों की रचना हुई। रुद्रभट ने 'जगन्नाथ विजय' की रचना की। अनदइया का 'मदनविजय' या 'कब्बिगार काव' बिना संस्कृत के उपयोग के विशुद्ध कन्नड़ की एक रोचक पुस्तक है। मल्लिकार्जुन के द्वारा किया गया कन्नड़ सूक्तियों का पहला संकलन 'सूक्तिसुधार्णव' और व्याकरण पर केसीराजा की 'शब्दमणिदर्पण' कन्नड़ भाषा की दो अन्य मानक कृतियाँ हैं।

माना जाता है कि चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच विजयनगर के राजाओं के संरक्षण में कन्नड़ साहित्य फला-फूला। कुंवर व्यास ने 'भारत' और नरहरि ने 'तारव रामायण' की रचना की। सत्रहवीं शताब्दी में लक्ष्मीशा जिन्होंने 'जामिनी भारत' लिखा, उन्हें कामना-करिकुतवन-चैत्र (कर्नाटक की आम्र-उपवन की बसंत) की उपाधि मिली।

तत्कालीन समय के अन्य महत्त्वपूर्ण कवि महान 'सर्वजन' थे, जो जनता के कवि के नाम से लोकप्रिय थे। उनके द्वारा रचित त्रिपदी सूक्तियाँ, ज्ञान और आचरण का स्रोत हैं। कन्नड़ की सम्भवतः शायद पहली अद्वितीय कवयित्री, होन्नाम्मा, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी रचना 'हादिबदेय धर्म' (श्रद्धावान पत्नी का कर्त्तव्य) आचरण मूल्यों का सार-संक्षेप है।

मलयालम साहित्यः मलयालम भाषा केरल और आस-पास के इलाकों में बोली जाती है। मलयालम भाषा का उद्भव लगभग 11वीं शताब्दी में हुआ। 15वीं शताब्दी तक मलयालम को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में पहचान मिल गई।

टिप्पणी

'भाषा कौटिल्य' जो अर्थशास्त्र पर एक टिप्पणी है और 'कोकासंदिसन' मलयालम में रचित दो महान कृतियां हैं। राम पण्णिकर और रामानुजन एजहुथाचन मलयालम साहित्य के जाने-माने साहित्यकार हैं। हालांकि अन्य दक्षिण भारतीय भाषाओं की तुलना में मलयालम भाषा का विकास बहुत बाद में हुआ, फिर भी इसने अभिव्यक्ति के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। आज मलयालम में अनेक शोधपत्र, अखबार और पत्रिकाएं निकलती हैं।

6.9 तमिल या संगम साहित्य

लिखित भाषा के रूप में तमिल ईसा काल के आरंभ से ही जानकारी में थी। अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि अत्यधिक संगम साहित्य की रचना ईसा काल की आरंभिक चार शताब्दियों में हुई, यद्यपि उसका अंतिम रूप से संकलन 600 ईसवी तक हुआ। राजाओं एवं सामान्तों के आश्रयाधीन सभाओं में एकत्र हुए कवियों ने तीन से चार शताब्दियों की अवधि में संगम साहित्य की रचना की। कवि, चारण, लेखक और रचनाकार दक्षिणी भारत के विभिन्न भागों से मदुरै आए। इनकी सभाओं को संगम और इन सभाओं में रचित साहित्य को संगम साहित्य कहा गया। इसमें तिरूवल्लूवर जैसे तमिल संतों की कृतियाँ 'कुरल' उल्लेखनीय हैं जिनका बाद में अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया। संगम साहित्य अनेक वीरों और वीरांगनाओं की प्रशंसा में रचित अनेक छोटी-बड़ी कविताओं का संग्रह है। इनका स्वरूप धर्मनिरपेक्ष है तथा ये उच्चकोटि की रचनाएँ हैं। ऐसी तीन संगम सभाएँ आयोजित हुईं। प्रथम संगम में संकलित कविताएं गुम हो गईं। दूसरे भाग की 2000 कविताएँ संकलित की गई हैं।

संगम साहित्य में 30,000 पंक्तियों की कविताएं शामिल हैं। इन्हें आठ संग्रहों में संकलित किया गया, जिन्हें एट्टूतोकोई कहा गया। इनके दो मुख्य समूह हैं- पाटिनेनकिल कनाकू (18 निचले संग्रह) और पट्टूपट्टू (10 गीत)। पहले समूह को सामान्यत: दूसरे से अधिक पुराना और अपेक्षाकृत अधिक ऐतिहासिक माना जाता है। तिरुवल्लुवर की कृति 'कुराल को तीन भागों में बांटा गया है। पहला भाग महाकाव्य, दूसरा भाग राजनीति और शासन तथा तीसरा भाग प्रेम विषयक है।

संगम साहित्य के अलावा एक रचना 'तोलक्कापियम' भी है। इस रचना का विषय व्याकरण और काव्य है। इसके अतिरिक्त 'सिलाप्पदीकारम्' तथा 'मणिमेकलई' नामक दो महाकाव्य हैं, जिनकी रचना लगभग छठी ईसवी में की गई। पहला महाकाव्य तमिल साहित्य का सर्वोत्तम रत्न माना जाता है। प्रेमगाथा को लेकर इसकी रचना की गई है। दूसरा महाकाव्य मदुरै के अनाज व्यापारी ने लिखा था। इस प्रकार दोनों महाकाव्यों में दूसरी सदी से छठी सदी तक तमिल समाज के सामाजिक, आर्थिक जीवन का चित्रण प्राप्त होता है।

छठी सदी से बारहवीं सदी ईसवी तक नयनमारों (शैव भक्ति की प्रशंसा में गाने वाले संत) ने तमिल में भक्ति पूर्ण कविताएँ लिखी और अलवरों ने भक्ति आंदोलन चलाया जिसका सम्पूर्ण भारतीय महाद्वीप में प्रचार किया। इसी समय में ''कम्ब रामायणम्'' और 'पेरिया पुराणम् तमिल साहित्य के महान ग्रन्थ रचे गए।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- विरासत पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिलने वाली बौद्धिक संपदा का योग है।
- संस्कृत भारत की प्राचीनतम भाषा है।
- ऋग्वेद मानव जाति की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक समृद्ध साहित्यिक विरासत है।
- उपनिषदों ने विश्व के महानतम दार्शनिकों को प्रभावित किया है।
- रामायण और महाभारत महाकाव्यों का देश के सामाजिक लोकाचारों पर अभी तक प्रभाव है।
- पुराण जनसाधारण को मार्ग दिखाते हैं।
- जैन धर्म में सदाचार तथा नैतिकता पर बल दिया गया है- यह अहिंसा, सत्यता और पवित्रता का उपदेश देता है। जातक कथाएँ उस काल के लोगों के विचारों तथा जीवन की जानकारी के अमूल्य स्रोत हैं। बौद्ध संघ महान अध्ययन केन्द्र थे।
- कानून, राजनीति शास्त्र, चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, जीव विज्ञान, रसायन शास्त्र, वास्तुशिल्प पर प्राचीन भारतीय भाषाओं में अमूल्य ग्रंथ रचे गए हैं।
- तमिल साहित्य 'संगम' साहित्य के रूप में प्रसिद्ध है।

पाठांत प्रश्न

1. ''संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं का मूल है।'' विश्लेषण करें।
2. उपनिषदों के महत्त्व का वर्णन करें।
3. बौद्ध और जैन साहित्य के ग्रन्थों की सूची बनाएँ और उनके दो-दो ग्रन्थों के विषय में विस्तार से लिखें जो आपको रोचक लगे।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

   (1) संगम साहित्य

   (2) वेद
5. महाकाव्य 'शिल्पदिकरम्' एवं 'मणिमेकलई' की क्या कथा है?
6. तारव के रामायण की विशेषता क्या है?

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1
1. संस्कृत
2. ऋग्वेद

6.2
1. ज्ञान
2. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
3. इसका अर्थ है- यज्ञ एवं पूजा, उस समय की सामाजिक और धार्मिक अवस्था
4. सोलह हजार

6.3
1. उपनिषद् का अर्थ है गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना
2. ऐतरेय, केन, कठ, बृहदारण्यक एवं छांदोग्य।
3. कृष्ण अर्जुन को एक योद्धा के रूप में उसे उसका कर्तव्यबोध कराते हैं और उदाहरणों सहित विभिन्न दर्शनों की व्याख्या करते हैं।

6.4
1. रामायण एवं महाभारत
2. वाल्मीकि एवं वेद व्यास

6.5
1. 18 पुराण तथा 18 उप-पुराण
2. पुराण सृष्टि के रहस्य, पुन:सृष्टि, वंश और वंशावलियों का उल्लेख करते हैं।

6.6
1. पाली एवं प्राकृत
2. विनयपिटक, सुत्तपिटक एवं अभिधम्मपिटक
3. भगवान बुद्ध के पिछले जन्मों के बारे में बताते हैं जिनमें उन्होंने धर्म की साधना की थी।
4. दो महत्त्वपूर्ण जैन विद्वान हरिभद्रसूरी (आठवीं सदी) तथा हेम चन्द्र सूरी (बारहवीं सदी)

6.7
1. कानून
2. कल्हण
3. अभिज्ञानशाकुंतलम्
4. गीतगोविंद
5. चरक